भोजपुरी भाषा के विकास में मीडिया का योगदान

डॉ0 ज्योति सिनहा,

पूर्व फेलो,
भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास शिमला, हिमाचल प्रदेश

किसी देश अथवा समाज–विशेष की संस्कृति से हम उसके उत्कर्ष और अपकर्ष का इतिहास जान सकते हैं। वर्तमान समय में भाषा एवं संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करने का सबसे सरल साधन मीडिया है। मीडिया समाज का आईना होता है; उसमें मानव की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और जीवन–सम्बन्धी सभी चेतनाओं का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप विद्यमान रहता है।

''सभ्यताएँ अपनी आत्म–कथाएँ तीन प्रकार की हस्तलिपियों में लिखती हैं। कृत्यों की हस्तलिपि में, शब्दों की हस्तलिपि में और कलाओं की हस्तलिपियों में, इनमें से कोई भी हस्तलिपि दो अन्य को पढ़े बिना बोधगम्य नही हो सकती हैं,परन्तु इन तीनों में से विश्वसनीय केवल तीसरी ही हस्तलिपि है।''

इसमें कोई दो राय नही कि राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर मातृभाषाओं के महत्व को स्वीकार किया जा रहा है। दुनिया भर के शिक्षाविदों का मानना है कि समझ का सबसे बेहतर माध्यम मातृभाषाएँ हैं। इसीलिए यूनेस्को ने मातृभाषाओं के संरक्षण पर जोर दिया है और २१फरवरी को अन्तरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस घोषित किया गया है। शिक्षाविद मानते हैं कि कम से कम प्राइमरी एजुकेशन मातृभाषा में हो जिससे समझ, सृजनात्मकता और कल्पनाशीलता का सम्यक विकास हो सके। आज समय की जरूरत है क्योंकि देसी भाषाओं का अस्तित्व खतरे में है। उन्हें बचाने का उद्यम करना चाहिए। देसी भाषाएँ रहेंगी तभी हिन्दी विकसित होगी। याद रखिए भाषाएँ नदियों की तरह हैं, उनमें जितना जल होगा, प्रवाह होगा हमारे सांस्कृतिक स्वास्थ्य के लिए उतना ही अच्छा होगा।

आरम्भिक शिक्षा मातृ भाषा में हो तो छात्रों की कल्पना शक्ति, सृजनशीलता आदि को सम्यक स्फूर्ति दी जा सकती है। भोजपुरी भाषा और साहित्य के उत्थान का प्रश्न अनिवार्य रूप से भोजपुरी समाज के उत्थान से जुडा हुआ है। इसके लिए भोजपुरी समाज में मौजूद सामाजिक, सांस्कृतिक, कलात्मक सम्पदा का अध्ययन आवश्यक है। भोजपुरी जनपद में विकसित कला कौशल, देशज ज्ञान, शब्द सम्पदा और साहित्यिक थाती का अध्ययन अपेक्षित है। यह सब भोजपुरिया लोगों को ही करना होगा। जाहिर है बाहर से कोई यह अध्ययन करने नहीं आएगा। लोक संस्कृति की समस्त सम्भावनाएँ भोजपुरी भाषा में सन्निहित हैं। इस भाषा में माधुर्य, काव्यात्मक, संगीतात्मकता एवं सहज भावनाओं की अनुपम छटा है–जिस कारण आज के परिवेश में इसे अत्यधिक लोक प्रियता प्राप्त हो रही है। जीवन के कोलाहल से दूर एकान्तिक क्षणों में अपने प्रियतम की तलाश करती हुयी विरहिणी अपनी पीड़ा से किसके हृदय को विगलित नहीं करती ? भोजपुरी लोक संस्कृति में करुण रस की जो सरिता प्रवाहित होती है वह किसको द्रवित नहीं करती। स्पष्ट है कि विकास की अनन्त सम्भावनाओं को लेकर भोजपुरी भाषा आज अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बना चुकी है। देश–प्रेम और

वीरता भोजपुरी भाषा की विशिष्टता है। इस विशेषता को लक्ष्य करके जार्ज ग्रियर्सन ने लिखा है कि ''भोजपुरी उस शक्तिशाली, स्फूर्तिपूर्ण और उत्साही जाति की व्यावहारिक भाषा है जो परिस्थिति और समय के अनुकूल अपने को बनाने के लिए सदा प्रस्तुत रहती है और जिसका प्रभाव हिन्दुस्तान के हर भाग पर पड़ा है। हिन्दुस्तान की सभ्यता फैलाने का श्रेय बंगालियों और भोजपुरियों को ही जाता है। जार्ज ग्रियर्सन के शब्दों में यदि हम कुछ परिवर्तन करके यह कहें कि इस कार्य में बंगालियों ने अपनी कलम से काम लिया और भोजपुरी भाषियों ने अपनी विनम्र वाणी से इसकी लोकप्रियता में चार चांhद लगाए, तो भोजपुरी लोक संस्कृति की प्रतिष्ठा और बढ़ जाती है। इस भाषा में लोक संस्कृति अपने चरमोत्कर्ष पर दिखाई देती है। इसमें कोई दो राय नहीं कि गेयता,संगीतात्मकता,कलात्मकता एवं करुण रस के अनुपम सौन्दर्य को लेकर भविष्य में और भी समृद्ध होगी।

भोजपुरी शब्द का भाषा के रूप में सर्वप्रथम उल्लेख पटना के 'गजेटियर्स रिवीजन स्कीम' के विशेष अफसर पी.सी. राय चौधरी के अनुसार ''भोजपुरिया नाम से सन् 1789 ई0 में हुआ।'' भोजपुरी भाषा का नामकरण बिहार में बक्सर के निकट स्थित 'भोजपुर' नामक स्थान से हुआ है, जो बिहार के बक्सर सब डिवीज़न में डुमराँव से दो मील की दूरी पर स्थित है। यह पटना से सौ मील की दूरी पर है। माना जाता है कि भोजपुर किसी जमाने में मालवा अर्थात् उज्जैन से आए शक्तिशाली राजपूतों की राजधानी था। इसके नामकरण के विषय में प्रमुखतः प्रचलित मत निम्नांकित हैं–''भोजपुरी एक अत्यन्त मधुर एवं संगीतात्मकता से परिपूर्ण भाषा है,जिसकी मिठास केवल भारत ही नहीं वरन् नेपाल, फिजी, मॉरीशस, सूरीनाम, गुयाना, ट्रिनीडाड और टोबैगो, सिंगापुर दक्षिण अफ्रीका, मलेशिया, थाईलैण्ड आदि देशों में भी गूँज रही है। नेपाल में तो भोजपुर को वहाँ की 14 मान्यता प्राप्त भाषाओं की सूची में स्थान दिया गया है।'' आज विश्व के लगभग 44 करोड़ से अधिक भारतवंशी लोगों की मातृभाषा के रूप में भोजपुरी समादृत है।

ग्रियर्सन ने अपने भाषा सर्वेक्षण में लिखा है–गंगा से उत्तर इस भाषा (भोजपुरी) की सीमा मुजफ्फरपुर जिले के पश्चिमी भाग की मगही है। फिर उस नदी के दक्षिण इसकी सीमा गया और हजारीबाग की मगही से मिल जाती है। वहाँ से यह सीमान्त रेखा दक्षिण–पूर्व की ओर हजारीबाग की मगही भाषा के उत्तर घूमकर सम्पूर्ण राँची पठार और पलामू तथा राँची जिले के अधिकांश भागों में फैल जाती है। दक्षिण की ओर यह सिंहभूमि की उड़िया और गंगपुर स्टेट की तद्देशीय भाषा से परिसीमित होती है। यहाँ से भोजपुरी की सीमा जसपुर रियासत के मध्य से होकर राँची पठार के पश्चिमी सरहद के साथ–साथ दक्षिण की ओर जाती है, जिससे सरगुजा और पश्चिमी जसपुर की छत्तीसगढ़ी भाषा से इसका विभेद होता है। पलामू के पश्चिमी प्रदेश से गुजरने के बाद भोजपुरी भाषा की सीमा मिर्जापुर जिले के दक्षिणी प्रदेश में फैलकर गंगा तक पहुँचती है। यहाँ यह गंगा के बहाव के साथ–साथ पूर्व की ओर घूमती है और बनारस के निकट पहुँचकर गंगा पार कर जाती है। इस तरह मिर्जापुर जिले के ''उत्तरी गांगेय प्रदेश के केवल अल्प भाग पर ही इसका प्रसार रहता है। मिर्जापुर के दक्षिण में छत्तीसगढ़ी से इसकी भेंट होती है, परन्तु उस जिले के पश्चिमी भाग के साथ–साथ उत्तर की ओर घूमने पर इसकी सीमा पश्चिम में पहले बघेलखण्ड की बघेली और फिर अवध की अवधी से जा लगी है।'' सरिता बुद्धु ने ''मुजफ्फरपुर तथा वैशाली में भी भोजपुरी की व्याप्ति मानी है'', जबकि डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय ने ''फैजाबाद को भी इसमें परिगणित कर लिया है।''

बहुस्तरीय उपेक्षा और अवमानना की शिकार भोजपुरी का मुस्तकबिल अब एक ऐतिहासिक बदलाव के मोड़ पर खड़ा है। इसकी अनेक वजहें है। उन्नीसवीं शताब्दी में पादप अर्थशास्त्र के (Plantation economy) के चलते भोजपुरी क्षेत्र से गिरमिटिया (Agreement) मजदूरों के रूप में प्रवासन बहुतायत में हुआ। अटठारह सौ सत्तावन की क्रान्ति के समय भोजपुरिया क्षेत्र के लोगों की संलग्नता के कारण अंग्रेजी फौज में इधर के लोगों की भर्ती कम होने लगी और प्रवासन की इस प्रक्रिया को और गति मिली। किस्सा यह कि भारी पैमाने पर भोजपुरी क्षेत्र से गिरमिटिया मजदूर गये। उन्हें यह कह कर ले जाया गया कि इन द्वीपों में पत्थरों के नीचे सोना है। पत्थर हटाकर सोना निकालना है। वह सोना तो नहीं मिला पर उसके चक्कर में इन मजदूरों का सोने जैसा जीवन जरूर नष्ट हो गया। अंग्रेजी शासन में गिरमिटिया मजदूर के रूप में भारत के बाहर जाकर नौकरी करने वाले लोगों में पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के व्यक्तियों की संख्या अधिक थी जो धीरे–धीरे उन राष्ट्रों की प्रमुख शक्ति बन गयी। इस प्रकार उनकी भाषा के रूप में भोजपुरी उन राष्ट्रों में प्रतिष्ठित हो गयी। भोजपुरी भाषा की पृष्ठभूमि के बारे में केवल मॉरीशस की बात करें तो साढ़े चार लाख गिरिमिटिया मजदूर अप्रावासी–गिरिमिटिया पहले अल्प संख्या में मॉरीशस में आये। यह सिलसिला (सन् 1834 ई0–सन् 1924 ई0) तक चला। हिन्दी भाषा के बाद भोजपुरी भारत में सबसे ज्यादा (दो करोड़ से अधिक) बोली जाने वाली भाषा है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि भोजपुरी क्षेत्र की लोक संस्कृति काफी समृद्ध है। इसकी एक अपनी अलग पहचान है। यह लोक संस्कृति विदेशों में मॉरीशस,त्रिनिडाड, युगांडा, फीजी आदि देशों में भी फैल चुकी है। इन मजदूरों ने अपने परिश्रम से खेतों में सोना उगाया और ऐसे देश बनाए जो समृद्धि की नयी दास्तान बने। परिस्थिति ने पलटा खाया। कल के गिरमिटिया आज गवर्नमेण्ट हो गये। इस परिवर्तन ने भोजपुरी भाषी समाज के भीतर एक गौरव का संचार किया। देश के भीतर भी भोजपुरिया लोगों ने सामाजिक राजनीतिक जीवन में अनेक ऊँचाइयाँ हासिल कीं। देश के पहले राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद हों, दलित जीवन के उन्नायक जगजीवन राम हों, दूसरी आजादी के शिल्पी जयप्रकाश नारायण हों ए भारत के प्रधानमन्त्री पद तक पहुँचने वाले ठेठ भोजपुरिया चन्द्रशेखर हों, उस्ताद बिसिमलाह खां जैसा शहनाई वादक हो या फिर भारतेंदु, प्रेमचन्द, हजारी प्रसाद द्विवेदी, राहुल सांस्कृत्यायन, नामवर सिंह, केदारनाथ सिंह जैसे कवि लेखक। इन सबने भोजपुरी समाज के भीतर एक गौरव और स्वाभिमान का संचार किया। इस संचार से औपनिवेशिक दौर में सचेत रूप से पैदा की गई इस हीनता ग्रनिथ को धक्का लगा और भोजपुरी को लेकर झिझक कम होती गयी। भोजपुरी के मौखिक और लिखित साहित्य के संकलन संरक्षण की ओर ध्यान गया। उसके अध्ययन, मूल्यांकन की शुरुआत हुई।

भोजपुरी भाषा का सबसे महत्वपूर्ण लक्षण है कि यह साधारण लोगों के सुख–दुख, आँसू और हँसी को चित्रित करने में सक्षम है। वास्तव में देखा जाये तो ये बार–बार घटित होने वाले विषय आम व्यक्ति के सामाजिक, धार्मिक और पारिवारिक जीवन को अंकित करते हैं। यह एक अत्यन्त प्राचीन तथा अविच्छिन्न परम्परा है। भारतीय लोकवार्ता से सम्बन्धित कार्य करने वाले विद्वानों में सर्वाधिक प्रसिद्ध नाम है, जार्ज ग्रियर्सन का ,जो प्रसिद्ध भाषाविद् थे। सन् 1886 ई0 में ग्रियर्सन का ग्रन्थ ''सम भोजपुरी फोक सॉग्स'' प्रकाशित हुआ जिसमें बिहार के भोजपुरी जनपद के बिरहा, जतसार तथा सोहर नामक गीतों का संकलन किया गया था। इसके पश्चात् अनेक लेख लिखे गये। एच. दामंत, विलियम क्रुक, आर. एम. कांकरनैस, डब्ल्यू. टी. डेल्स इत्यादि अंग्रेजी विद्वानों ने भोजपुरी लोक साहित्य, लोकगीतों पर कार्य किया।

भारतीय आर्य भाषाओं की पूर्वी अथवा मगध परिवार की पश्चिमी प्रमुख बोली भोजपुरी पूर्वी अपभ्रंश से प्रमुखतः तथा संस्कृत–प्राकृत और पालि से परिवर्तित हुई है। ब्रिटिश अफसर डॉ0 ग्रियर्सन, जिन्होंने भारत का भाषावैज्ञानिक सर्वेक्षण किया, ने भोजपुरी को 'बिहारी हिन्दी' की संज्ञा दी। बिहारी से तात्पर्य है कि जिसमें मगही, मैथिली, अवधी और भोजपुरी समाविष्ट हैं। भोजपुरी को आम तौर पर बोली, जनपदीय भाषा या लोक भाषा कहा जाता है। विद्वानों के अनुसार भोजपुरी एक समर्थ और जीवन्त भाषा है। भोजपुरी भाषा की विशेषता उसकी कोमलता और विशाल जनजीवन में समायी हुई लोक संस्कृति की अस्मिता है। भोजपुरी के अपने ही कई बोली रूप हैं। चार की चर्चा तो ग्रियर्सन ने ही की है–उत्तरी, दक्षिणी, पश्चिमी और नगपुरिया। साथ ही भोजपुरी को ग्रियर्सन ने 'बिहारी' बोली वर्ग में मैथिली और मगही के साथ रखा है। अपनी पुस्तक 'भारत का भाषा वैज्ञानिक सर्वेक्षण' खण्ड 5, भाग 2 में डॉ0 ग्रियर्सन लिखते हैं–भोजपुरी उस शक्तिशाली, स्फूर्ति पूर्ण उस सक्रिय जाति की व्यवहारिक भाषा है जो हमेशा अपने को परिस्थितियों के अनुकूल ढालने के लिए तत्पर रहती है, जिसने समस्त भारत पर अपना प्रभाव छोड़ रखा है। परन्तु अन्य विद्वानों जैसे उदय नारायण तिवारी, श्री जयकान्त मिश्र, भोलानाथ तिवारी, डॉ0 सुनीति चटर्जी, रास बिहारी पाण्डेय इत्यादि ने भोजपुरी भाषा व बोली के सन्दर्भ में अपने अलग–अलग तर्कसंगत मत प्रस्तुत किये हैं।

भोजपुर क्षेत्र के निवासियों ने कूपमण्डूकता से सदैव परहेज किया है और अपनी निर्धनता तथा बेकारी से मुक्ति पाने हेतु उन्होंने न सिर्फ भारत, अपितु विदेशों में भी काम की तलाश में जाने से गुरेज नहीं किया है। अट्ठारहवीं शताब्दी में वे गिरमिटिया मजदूर के रूप में विभिन्न देशों में मजदूर बनकर गए और अपनी मेहनत, दृढ़ इच्छा शक्ति तथा संकल्पनिष्ठता के बल–बूते पर उन्होंने प्रगति एवं विकास की ऐसी अमर गाथा लिखी कि आज अनेक देशों में वे राजनीति के शिखर तक पहुँचे हैं। आज भी देश–विदेश के प्रायः प्रत्येक क्षेत्र में परिश्रम तथा ईमानदारी की मिसाल पेश करते भोजपुरी जन देखे जा सकते हैं। मॉरीशस, फिजी तथा ट्रिनीडाड और टोबैगो में तो उन्होंने राष्ट्राध्यक्ष के पद को भी सुशोभित किया है। सर शिवसागर रामगुलाम, वासुदेव पाण्डेय तथा महेन्द्र पाण्डेय ऐसे ही नाम हैं। युवा मोहनदास को महात्मा गाँधी के रूप में परिवर्तित करने का श्रेय दक्षिण अफ्रीका के भोले–भाले अधिकांश गिरमिटिया भोजपुरी मजदूरों को ही है, जिनके साथ अंग्रेज़ों द्वारा किए गए क्रूर अत्याचारों का सफलतापूर्वक विरोध करने के बाद ही गाँधी जी को सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्धि हासिल हुई थी और भारत आने पर उन्हें देश का निर्विवाद नेता स्वीकार कर लिया गया था। यहाँ आते ही महात्मा गाँधी ने भोजपुरी क्षेत्र चम्पारन के नील उत्पादक किसानों को शोषण से बचाने के लिए आन्दोलन छेड़ा और जन–जन के कण्ठहार बन गए।

जॉर्ज ग्रियर्सन ने भोजपुरी लोगों की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि ''भोजपुरी वाले साहसी कार्य करने हेतु उत्सुक रहते थे। जिस प्रकार आयरलैण्ड के लोग छड़ी के शौकीन हैं, उसी प्रकार हृष्ट–पुष्ट भोजपुरी लोग अपने घर से दूर अपने हाथों में लाठी लिए खेतों में काम करते हैं। हजारों की संख्या में ये मजदूर ब्रिटिश उपनिवेशों में गए।''

ग्रियर्सन ने ही भोजपुरी भाषा तथा लोगों के विषय में एक अन्य स्थान पर लिखा है कि ''भोजपुरी उस उत्साहित जाति की व्यावहारिक भाषा है, जो परिस्थिति के अनुरूप ढलने को हमेशा तैयार रहती है और जिसका प्रभाव हिन्दुस्तान के हर एक भाग पर पड़ा है।'' और आज ऐसा ही हो रहा है। आज भोजपुरी भारत

एवं विश्व की सर्वाधिक तेज़ी से विकसित एवं लोकप्रिय हो रही सह भाषाओं में से एक है।

भोजपुरी में प्राचीन साहित्य उपलब्ध नहीं मिलता। मध्यकालीन सन्त साहित्य पर भोजपुरी का प्रभाव अवश्य पड़ा है। आधुनिक काल में भोजपुरी साहित्य का विकास अवश्य हुआ है। राहुल सांकृत्यायन, कृष्णदेव उपाध्याय, चतुरी चाचा, रघुवीर, भिखारी ठाकुर आदि की रचनाएँ भोजपुरी में मिलती हैं। इसके अतिरिक्त पत्र–पत्रिकाएँ भी प्रकाशित हो रही हैं। आज इस भाषा की लोकप्रियता बहुत अधिक है। भोजपुरी साहित्य अकादमी द्वारा स्वीकृत भाषा है तथा उ.प्र. एवं बिहार सरकार ने भोजपुरी अकादमी बनाकर इसके विकास का महत्वपूर्ण प्रयत्न किया है। भोजपुरी लोक साहित्य की अत्यन्त समृद्ध भाषा है।

यदि हम भोजपुरी भाषा के साहित्य का विश्लेषण किया जाए तो उसमें प्रधानतया गीत, गाथायें और कथायें उपलब्ध होती हैं। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसा भी मौखिक साहित्य प्राप्त होता है जो उपर्युक्त तीन विभागों में अंतर्भुक्त नहीं होता। भोजपुरी लोक संस्कृति का कोई ऐसा कोना नहीं है जो इससे अछूता है। विदेशों में लोक–साहित्य की रक्षा के लिये अनेक समिति और संस्थायें बनी हुई हैं। हमारे देश में विद्वानों का ध्यान इस आवश्यक विषय की ओर अभी कुछेक एक दशकों से गया है। हर भाषा के साहित्य में इस विषय पर अब ज्यादा सतर्कतापूर्वक कार्य किया जा रहा है तथा भोजपुरी लोक–साहित्य भी इससे अछूता विषय नहीं रह गया है। भोजपुरी लोक–साहित्य से संबंधित यह कार्य लगभग दो से तीन दशक पूर्व प्रमुख रूप से प्रकाश में आया तथा तब से यह अनवरत जारी है। अतः भोजपुरी लोक संस्कृति की रक्षा की दृष्टि को ध्यान में रखते हुए ये नितांत आवश्यक है कि हम भोजपुरी की साहित्यिक धरोहर का पुनः सृजन एवं संरक्षण करें।

अधिकांश विद्वानों ने इस बात पर आश्चर्य जताया है कि भोजपुरी भाषा के इतनी सरस, मधुर एवं जीवन्त होने के बावजूद इसमें अपेक्षित मात्रा में साहित्य सृजन नहीं हुआ है, जबकि इसकी पड़ोसी अवधी तथा मैथिली साहित्य सृजन की दृष्टि से इससे कोसों आगे हैं। विद्वानों ने इसका कारण भी खोजने का प्रयत्न किया है और इस सम्बन्ध में मूलतः दो मत ही सामने आए हैं। प्रथम मत के अनुसार भोजपुरी को राज्याश्रय नहीं मिल सका, इसी कारण इसके साहित्य में अपेक्षित श्रीवृद्धि नहीं हो सकी। ''वास्तव में भोजपुरी साहित्य की अभिवृद्धि न होने का प्रधान कारण है, राज्याश्रय का अभाव। ज्यादातर भोजपुरी प्रदेशों में किसी प्रभावशाली, व्यापक एवं प्रतापी नरेश का पता नहीं चलता। अधिकतर इसमें किसानों की ही बस्तियाँ हैं। किसी गुणग्राही नरेश का आश्रय न मिलने से इस भाषा का साहित्य समृद्ध न हो सका। भोजपुरी को तो न विद्यापति मिले, न सूर ही। मैथिली और ब्रज के समान इसकी वृद्धि हो तो कैसे।''

डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी भी प्रायः इसी दृष्टिकोण को व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि''तुलसी ने अवधी और विद्यापति ने मैथिली को गौरवान्वित किया है, परन्तु मेरी जानकारी में भोजपुरी को किसी महाकवि ने अपनी प्रतिभा के माध्यम के रूप में नहीं अपनाया। कबीर भोजपुरी प्रदेश के रहने वाले अवश्य थे, परन्तु उनकी काव्य साधना प्रायः खड़ी बोली में हुई है। लेकिन जहाँ लिखित साहित्य के क्षेत्र में यह खटकने वाला अभाव दीख पड़ता है, वहाँ भोजपुरी का अलिखित वाड.मय भण्डार, उसका लोक साहित्य बहुत समृद्ध है, इसमें कोई सन्देह नहीं।''

डॉ0 सत्यव्रत सिन्हा ने भोजपुरी के लिखित साहित्य के विकसित न हो पाने के दो कारण बताए हैं–''प्रथम, प्राचीन काल में जहाँ

बंगाल एवं मिथिला के ब्राह्मणों ने संस्कृत के साथ–साथ अपनी मातृभाषा को भी साहित्यिक रचना के लिए अपनाया, वहाँ भोजपुरी पण्डितों ने केवल संस्कृत के अध्ययन और अध्यापन पर ही विशेष बल दिया। संस्कृत के अध्ययन का प्राचीन केन्द्र काशी भोजपुरी प्रदेश में ही स्थित है। संस्कृत साहित्य को उत्तरोत्तर परिष्कृत करने में तथा उसके प्रचार को अक्षुण्ण बनाए रखने के कारण भोजपुरी पण्डितों द्वारा मातृभाषा की उपेक्षा की गयी। भोजपुरी में साहित्य के अभाव का द्वितीय कारण है राज्याश्रय का अभाव।''

यद्यपि डॉ0 सत्यव्रत सिन्हा इस बात को पूर्णतः स्वीकार नहीं करते कि भोजपुरी में साहित्य का सर्वथा अभाव है। अपने मत के समर्थन में सिन्हा जी ने भोजपुरी में साहित्य सृजन करने वाले कवियों,संतों के नाम दिए हैं,जिनमें प्राचीन काल के ''धरमदास, शिवनारायण, धरनीदास तथा लक्ष्मी सखी एवं आधुनिक काल के बिसराम, तेजअली, बाबू रामकृष्ण वर्मा, दूधनाथ उपाध्याय, बाबू अम्बिका प्रसाद, भिखारी ठाकुर, मनोरंजन प्रसाद सिनहा, रामबिचार पाण्डेय, प्रसिद्ध नारायण सिंह, पण्डित महेन्द्र शास्त्री, श्याम बिहारी तिवारी, चंचरीक, रघुवीर शरण तथा रणधीरलाल श्रीवास्तव के नाम उद्धृत किए हैं।''

डॉ0 उदय नारायण तिवारी तथा डॉ0 मैनेजर पाण्डेय ने कबीरदास जी को भोजपुरी के प्रथम कवि की संज्ञा दी है। डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय ने ''कबीर, जायसी, तुलसी आदि कवियों के साहित्य में अनेक स्थलों पर प्रयुक्त हुए भोजपुरी शब्दों की पहचान कर यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि उनकी भाषा पर भोजपुरी की छाप अवश्य है।'' राज्याश्रय के अभाव के कारण साहित्य के विकसित न हो पाने का कारण बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण प्रतीत नहीं होता क्योंकि यदि किसी भाषा के साहित्य के विकसित होने के लिए राज्याश्रय अपरिहार्य होता तो अवधी में साहित्य सृजन सम्भव ही नहीं हो पाता क्योंकि अवधी को भी प्रायः राज्याश्रय नहीं मिला था, किन्तु वह न सिर्फ विकसित हुई बल्कि भक्तिकाल के सन्त कवियों की वाणी बनकर प्रवाहित हुई। यह अवश्य अंशतः सत्य हो सकता है कि संस्कृत साहित्य को उत्तरोत्तर परिष्कृत करने में तथा उसके प्रचार को अक्षुण्ण बनाए रखने के कारण भोजपुरी पण्डितों द्वारा मातृभाषा की उपेक्षा की गयी हों, किन्तु आम जनता ने इस क्षेत्र में सभी जनभाषाओं को पर्याप्त सम्मान दिया है। भोजपुरी क्षेत्र अर्थात् पश्चिमी बिहार तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश ने कभी भी संस्कृत का अंधानुकरण नहीं किया और पालि, प्राकृत आदि जनभाषाओं को भी पूर्ण सम्मान दिया है। यहाँ संस्कृत के प्रधान केन्द्र काशी स्थित सारनाथ में चिरकाल से पालि का पर्याप्त प्रचार रहा है। अतः भोजपुरी में लिखित साहित्य प्राप्त न हो पाने के पीछे यही कारण हो सकता है कि भोजपुरी का प्रचार ग्रामीण जनता में अधिक रहा होगा तथा प्रबुद्ध लोगों ने इसे साहित्यिकता की दृष्टि से उपयोगी न समझा होगा।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि किसी भी भाषा को साहित्य का माध्यम बनाना राज्य के अधिकार की बात नहीं है। ''यह तो कोई सिद्ध हस्त प्रतिभा सम्पन्न लेखक ही कर सकता है। राज्य अधिक से अधिक इस दिशा में यही कर सकता है कि वह उस भाषा के गद्य को अपने राजकीय कामों के लिए व्यवहार में लावे। सो, इसको सभी राज्यों ने पूर्वकाल से ही करना शुरू किया, जो आज तक जारी है। यही नहीं, वर्तमान सरकार ने भी जब–जब उसे प्रचार की आवश्यकता पड़ी है, इसको अपनाया है। पर तब भी भोजपुरी में न तो विद्यापति जी ऐसा मातृभाषा प्रेमी कोई कवि ही हुआ, जो अपनी प्रतिभा इसमें दिखा कर विद्वानों को भोजपुरी की ओर आकृष्ट कर सके और न ही हरिश्चन्द्र जी के ऐसा इसको कोई गद्य लेखक ही मिला, जो इसके गद्य साहित्य की अभिवृद्धि कर सके।''

आज जब हम नई सदी के दूसरे दशक में प्रवेश कर रहे हैं ऐसे में भोजपुरी ने स्वयं को एक सर्वप्रमुख भाषा के रूप में स्थापित करने में सफलता प्राप्त की है, जिसका श्रेय विदेशों में रहने वाले भारतवंशी भोजपुरी भाषी लोगों को दिया जाना चाहिए। इनमें एक बड़ी संख्या ऐसे लोगों की है, जिनका जन्म भी भारत में नहीं हुआ और आज से 250–300 साल पहले उनके पूर्वज गिरमिटिया मजदूर के रूप में विदेश गए थे किन्तु उन्होंने अपनी माटी एवं पूर्वजों की भाषा के प्रति अपनी अटूट आस्था दिखाते हुए न सिर्फ अपनी जड़ों को बचाकर रखा है, बल्कि भारतीयों को भी विवश किया है कि वे भोजपुरी भाषा की ताकत को पहचानें और इसके संवर्धन हेतु प्रयत्नशील हों।

इक्कीसवीं सदी के अत्याधुनिक संचार उपकरणों ने भोजपुरी भाषा एवं संस्कृति को लोकप्रिय बनाने में सहायता दी है। आज मात्र भोजपुरी में कार्यक्रम प्रसारित करने वाले अनेक चैनल भोजपुरी क्षेत्र में ही नहीं वरन् देश के प्रत्येक अंचल में रुचिपूर्वक देखे जा रहे हैं। इक्कीसवीं सदी के आरम्भ में भोजपुरी सिनेमा अपनी तन्द्रा से जागा है और भोजपुरी फिल्मों की बाढ़ सी आ गई है। गंगा मइया तोहरे पियरी चढ़इबो, बिदेसिया, बलम परदेसिया, गंगा किनारे मोरा गाँव, ससुरा बड़ा पइसा वाला, पण्डितजी बताई ना ब्याह कब होई, दरोगाा बाबू आई लव यू, दूल्हा मिल दिलदार, दगाबाज बलमा, दंगल आदि भोजपुरी फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर सफलता की नयी इबारत लिख रही हैं। और तो और अमिताभ बच्चन जैसे सदी के महानायक तथा लोकप्रिय दक्षिण भारतीय बॉलीवुड अभिनेत्री नगमा ने भी भोजपुरी फिल्मों में काम करके इन फिल्मों की महत्ता में चार चीाद लगा दिए हैं। बहुत से दक्षिण भारतीय फिल्मकार भी भोजपुरी फिल्मों का निर्माण कर रहे हैं।''रविकिशन, मनोज तिवारी 'मृदुल', राकेश पाण्डेय, कमाल खान, सुजीत कुमार, कुणाल सिंह, श्वेता तिवारी आदि भोजपुरी अभिनेता–अभिनेत्रियों की लोकप्रियता हिन्दी अभिनेताओं को टक्कर दे रही हैं।'' भोजपुरी धारावाहिक टी0 वी चैनलों पर देश–विदेश में अपनी लोकप्रियता से लोगों का दिल जीत रहे हैं। अगले जनम मोहे बिटिया ही कीजो (ज़ी टी0 वी0), भाग्यविधाता (कलर्स), स्वर्ग (कलर्स) आदि धारावाहिकों ने अपनी लोकप्रियता के नए प्रतिमान गढ़े हैं। महुआ चैनल पर प्रसारित होने वाले भोजपुरी कार्यक्रमों को लोग काफी रुचिपूर्वक देख रहे हैं। भारत सरकार ने भी भोजपुरी के संरक्षण–संवर्धन हेतु राजधानी नई दिल्ली में भोजपुरी अकादमी की स्थापना की है एवं राज्य सरकारें भी भोजपुरी भाषा एवं साहित्य के प्रति सतत् संवर्धन हेतु प्रयत्नशील हैं। ये सभी प्रयोजन भोजपुरी के उज्ज्वल भविष्य के परिचायक हैं।

यह बात सत्य है कि जितना कार्य, जितना विकास हिन्दी साहित्य में हुआ, उतना भोजपुरी में उतनी मात्रा में नहीं हुआ, और हुआ भी है तो वह प्रकाशित नहीं हो पाया है। डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय भोजपुरी भाषा के विकास में अवरोधक तत्वों पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं कि ''इतना होने पर भी यह कम दुःख की बात नहीं है कि इसका साहित्य अभी तक समृद्ध रूप में नहीं दीख पड़ता। वह अभी तक लिखित अवस्था में भी नहीं है बल्कि जीविका के लिए इधर–उधर भ्रमण करने वाले गायकों और अनपढ़ देहातियों की जिह्वा पर निवास कर रहा है। भोजपुरी साहित्य की अभिवृद्धि न होने का प्रधान कारण है राजाश्रय का अभाव। भोजपुर मण्डल में किसी प्रभावशाली, व्यापक प्रतापी नरेश का पता नहीं चलता। अधिकतर इसमें किसानों की बस्तियाँ हैं। किसी गुणग्राही नरपति के आश्रय न मिलने से साहित्य सम्पन्न न हो सका। भोजपुरी को तो न विद्यापति ही मिले, न सूर ही। मैथिली और ब्रज के समान इसकी वृद्धि हो तो कैसे हो ? विद्यापति के कारण मैथिली साहित्य का उदय हुआ और सूरदास के कारण बृजभारती चमक पड़ी, और ये दोनों रसिक

काव्य की भाषा समझी जाने लगी; किन्तु उत्साह तथा प्रतिभा के अभाव में भोजपुरी साहित्य पनप न सका। यदि प्रतिभा सम्पन्न कवि इसमें मिल गये होते, तो स्वभावतः सरस तथा मधुर होने के हेतु इसका भी साहित्य, रसिकों के गले का हार बन गया होता।'' फिर भी आशा की किरण के रूप में इस सबके बावजूद आज सरकारी व गैर सरकारी संगठन भोजपुरी, भाषा व बोली एवं इसकी दिशा को सहेजने संवारने में लगे हैं, अनेक कवि रचनाकारों की रूचि भोजपुरी साहित्य को समृद्ध करने में हो रही है इधर पिछले दिनों देश की राजधानी दिल्ली में महत्वपूर्ण भोजपुरी संगठनों ने मिलकर भोजपुरी भाषा को मान्यता दिलाने के लिये सक्रिय आन्दोलन किया जिसमें इन्हें सफलता भी मिली और इसके लिए बाकायदा एक्शन प्लान बनाने की घोषणा के पीछे भोजपुरी भाषा के प्रति हार्दिक लगाव का प्रतीक है। वैश्विक परिदृश्य की बात करें तो मॉरीशस आदि देशों में यह भाषा भारतीय प्रवासियों की आत्मा में आज भी जीवंत है। भोजपुरी के हर क्षेत्र में बढ़ते स्वर्णिम कदम साहित्य,कला (विशेषकर सिनेमा जगत) संस्कृति को देखते हुए ऐसा लगता है अब भोजपुरी की उपेक्षा बहुत अधिक समय तक नहीं की जा सकती है। और निश्चित ही इसका भविष्य स्वर्णिम होगा।

आज एक विराट परिवर्तन की पृष्ठभूमि बन रही है, हर क्षेत्र में राजनीति का हावी होना, पश्चिम का अनुकरण, आर्थिक उदारीकरण,साम्प्रदायिक कट्टरता और राष्ट्रीयता की भावना का क्षरण इस बदलाव के स्पष्ट संकेत हैं। अपसंस्कृतियों की जड़ें धीरे–धीरे जम रहीं हैं, इन अपसंस्कृतियों का करारा जवाब अगर कहीं और कुछ भी है तो वह हमारी लोक संस्कृति और लोकसाहित्य की अबाध परम्परा ही है। भोजपुरी लोकसाहित्य काव्य और भाषाशास्त्र की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सांस्कृतिक दृष्टि से भी भोजपुरी का संरक्षण नितान्त आवश्यक है। भारत की सभ्यता ग्रामीण है अतः यह सभ्यता लोकसाहित्य में छिपी पड़ी है। वर्तमान में भोजपुरी लोकसाहित्य के अनुसन्धान तथा संरक्षण की परम आवश्यकता है।

भोजपुरी भाषा एक खास ऐतिहासिक बदलाव के दौर से गुजर रही है। अतः वर्तमान में भोजपुरी डायस्पोरा का अध्ययन एक महत्वपूर्ण पहलू बन गया है। डायस्पोरा वाले देशों के साथ खास सामर्थ्य रिश्तों के साथ वाणिज्यिक संभावनायें तलाशने की दृष्टि से भी अध्ययन किया जाना चाहिए। भोजपुरी डायस्पोरा की दो पीढियाँ हैं। उन्नीसवी शताब्दी में ले जाये गए लोगों की पहली पीढ़ी है। आज रोजी रोटी की तलाश में सात समुन्दर पार जाने वाले भोजपुरिया लोगों की दूसरी पीढ़ी भी हमारे सामने हैं। इससे भी संवाद बनाये रखना बेहद जरूरी है। भोजपुरी क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से काफी समृद्ध है पर समुचित प्रबंधन न होने के नाते भोजपुरी जनपद के हित में इनका सदुपयोग नही हो पा रहा है। खास भोजपुरिया क्षेत्र में आर्थिक, औद्योगिक, पर्यटन प्रबंधन के विकास की प्रचुर संभावनाएँ हैं। इन सब संभावनाओं को तलाशने की जरूरत है। तब जाकर भोजपुरी को लेकर गहरे बनी और बची हुई हीनता ग्रंथि से निजात मिल पाएगी।

मीडिया में भोजपुरी भाषा की भागीदारी

वैश्वीकरण की अवधारणा ने वर्तमान समय में मीडिया को सर्वोपरि माना है।'मीडिया' भारतीय लोकतंत्र की सबसे मजबूत स्तम्भ मानी जाती है। भारतीय लोकतंत्र के तीन अन्य स्तम्भों व्यवस्थापिका, कार्यपालिका एवं न्याय पालिका की विसंगतियों को उजागर करना भी इसका दायित्व है। सुविधानुसार वर्तमान मीडिया को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है यथा प्रथम मुद्रित माध्यम–इसके अन्तर्गत समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें एवं विजिटिंग कार्ड आदि को रखा जा सकता है।द्वितीय के अन्तर्गत श्रव्य माध्यम इसके

अंतर्गत–रेडियो, टी.वी. फिल्म, कैसेट, डिस्क आदि को रखा जा सकता है। तृतीय प्रायोजनिक माध्यम के अन्तर्गत विज्ञापन, कम्प्यूटर, माइक्रोफिल्म, चिप्स आदि को समाहित किया जा सकता है।

महात्मा गाँधी के शब्दों में कहें तो – ''समाचार पत्रों में बड़ी शक्ति है, ठीक वैसी ही जैसी कि पानी के जबरदस्त प्रवाह में होती है। इसे खुला छोड़ देंगें तो गाँव के गाँव बहा देगा। उसी तरह निरंकुश कलम समाज के विनाश का कारण बन सकती है। लेकिन अंकुश भीतर का होना चाहिए, बाहर का अंकुश तो और भी जहरीला होगा।

मीडिया और जनसंचार समाज के निर्माण व विकास की कुंजी है। मीडिया के माध्यम से ही लोगों को अपने अधिकार व कर्तव्यों का एहसास आसानी से कराया जा सकता है। फीचर्स स्पीकिंग आउट से प्रेस यूनियन आफ लाइबेरिया के अनुसार–''किसी भी समाज के निरंतर विकास के लिए अति आवश्यक है–अनुशासन व शिक्षा जो कि मीडिया के माध्यम से इसकी व्यापकता और उपयोगिता बढ़ जाती है।''

भारतीय मीडिया ने भारतीय लोकतंत्र को सुदृढ़ बनाए रखने का महत्त्वपूर्ण कार्य भी करता है। सूचना क्रान्ति के वर्तमान समय में मीडिया के प्रत्येक अंग ने जनता पर अपना अलग और विशिष्ट प्रभाव छोड़ा है। समाचार–पत्र अब भी विचारपत्र की भूमिका निभा रहे हैं। रेडियो के एफ0एम0 चैनलों ने तो मनोरंजन के क्षेत्र में क्रान्ति ला दी है। अखबार या रेडियो के बाद अगर टेलीविजन की बात करें तो टेलीविजन को पारम्परिक संचार माध्यमों का डिस्प्ले–विण्डो कहा जाता है। वास्तव में आज हम जो भी वैश्विक संस्कृति देख रहे हैं, वह टेलीविजन के वैश्वीकरण की देन है। इण्टरनेट का आलम यह है कि भारत में इसका प्रयोग विश्व स्तर पर नौवें क्रम में हो रहा है। जाहिर है कि अखबार, रेडियो, टेलीविजन, इण्टरनेट और मोबाइल प्रौद्योगिकी जैसे प्रत्येक संचार माध्यम ने दर्शकों, पाठकों और श्रोताओं को अपनी–अपनी तरह से सूचित और प्रभावित किया है। प्रांजल धर के शब्दों में, "कनवर्जेण्ट मीडिया मुद्रित माध्यमों, श्रव्य माध्यमों और दृश्य–श्रव्य माध्यमों का एक ऐसा संगम है जहाँ मीडिया की शक्ति बहुत अधिक बढ़ जाती है।

भोजपुरी भाषा के विकास के लिए सोशल मीडिया पर भी नारों ने जोर पकड़ा है और बड़े जन आन्दोलन का रूप ले लिया है। भोजपुरी भाषा में पढ़ाई शुरू हो इसके लिए जनमानस में आये उबाल ने एक नई क्रांति को जन्म दे दिया है। यह क्रांति किसी पार्टी या समुदाय को लेकर नहीं बल्कि भोजपुरी भाषा की अस्मिता को लेकर है। बैठकों और आक्रोश के बीच भोजपुरी भाषी क्षेत्रों में इन दिनों हर जगह एक ही नारा दिख रहा है जो भोजपुरी में लिखा हुआ मिलता है– ना भीख ना करजा चाहीं, भोजपुरी के दरजा चाहीं, दूध मंगब त खीर देहब, भोजपुरी छिनब त चीर देहब, भोजीपुरी के मान बढ़ाई, डेग बढ़ाई आगे आईं, जैसे कई नारे दीवालों पर लिखे मिल रहे हैं। ऐसे नारों से शहर के चौराहे और कॉलेज पटे पड़े हैं।

सोशल मीडिया पर भी नारों ने पकड़ा जोर

भोजपुरी नारे सिर्फ जिला मुख्यालय के दीवारों पर ही नहीं बल्कि सोशल मीडिया पर भी पट्टे पड़े हैं। भोजपुरी भाषा से जुड़े लोग अपने डीपी, स्टेट्स, फेसबुक के प्रोफाइल और कवर फोटो के साथ अन्य फोटो को भी उस पर भोजपुरी के ऐसे नारे लिखकर इसे रोज प्रचलित कर रहे हैं. इन दिनों सोशल मीडिया पर भोजपुरी का ट्रेंड जोरों पर है. नारों और इस अनोखे प्रचलन ने सबका ध्यान भोजपुरी भाषा के विकास पर केंद्रित कर दिया है।

भोजपुरी भाषियों में भाषा के अपमान का आक्रोश

भोजपुरी के लिए,भोजपुर जिले से उठी नवयुवकों की आवाज पुरे देश में गूँजेगी इसकी किसी को भनक तक नहीं थी लेकिन जिस तरह से नवयुवको ने "भोजपुरी बचाओ अभियान" की शक्ल में सर्वदलीय एकता दिखाई उसने देश के कोने–कोने में राजनीतिज्ञों के कान खड़े कर दिए हैं। देश ही नहीं बल्कि विदेश में भी इस खबर को पाकर भोजपुरी भाषियों में एक नयी उम्मीद जगी है। दुबई, अमेरिका, सिंगापूर और मॉरीशस से भी लोग इस अभियान से जुड़ गए हैं। नित नए योजना के लिए लगातार सोशल मीडिया के जरिए भोजपुरिया लोग बातें कर रहे हैं। इस कारण दो बातें तेजी से हो रही हैं। एक तो वैसे लोग या संस्थाएँ जो भोजपुरी को लेकर वर्षो से आयोजन या धरना–प्रदर्शन करते रहे हैं वो भी नित नए आयोजन में लग गए हैं और दूसरे वो हैं जो भोजपुरी के नाम पर अपनी मठाधीशी अब तक कायम रखे थे,अब वो भी चिर–निद्रा से जग गए हैं और आगामी दिनों के लिए विशाल योजना बनाने में लग गए हैं। ऐसे लोगों को डर ये है कि कहीं इनकी हैसियत नवयुवक छीन न लें। भोजपुरी बचाओ अभियान के नाम से ही बक्सर,छपरा,सिवान,सासाराम और रोहतास में बैठकें शुरू हो गयी हैं। सभी लोग गोलबंद होकर अब सिर्फ भाषा की लड़ाई लड़ना चाहते हैं। पूर्वी चंपारण से भी भोजपुरी आंदोलन की खबर है। बैठकों और आयोजनों के इसी क्रम में कई सालों से बेहद सक्रिय रहे भिखारी ठाकुर सामाजिक शोध संस्थान,आरा (बिहार) ने भी भोजपुरी की पढ़ाई बंद होने का आक्रोश मौन–जुलुस निकाल कर किया।

मीडिया के माध्यम से ऐसी अनेक खबरें आ रही हैं कि भोजपुरी को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया जाए इसके लिए भोजपुरी क्षेत्र के दो माननीय सांसदों ने संसद में फिर से यह माँग की है। पिछले 8 अगस्त 2016 और इसके बाद 15 नवंबर2016 को इस माँग के समर्थन में दिल्ली के जंतर मंतर पर धरना दिया गया। 'जन भोजपुरी मंच' नामक संगठन के लोग भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री मोदी जी को इस आशय का संदेश भेजकर उन पर अपना दबाव भी बना रहे हैं। सबसे खुशी इस बात की है कि 12नवंबर 2016 को भारत के गृहमंत्री माननीय राजनाथ सिंह ने डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ (12 नवम्बर 2016) में भोजपुरी अध्ययन केन्द्र की स्थापना के उदघाटन के अवसर पर लखनऊ की एक सभा में बयान दिया कि भोजपुरी को संविधान की आठवी अनुसूची मे शामिल किया जाएगा। ये तथ्य यह बताने के लिए पर्याप्त हैं कि भोजपुरी भाषा बन चुकी है। भोजपुरी को बोली के रूप में देखते रहने का अभ्यास पिछड़ी सोच का परिचायक है। दरअस्ल किताबों में लिखी परिभाषाएँ धरी रह जाती हैं और जीवन का सत्य बदल जाता है। कल का शिशु वयस्क होकर देश और समाज का नेतृत्व करने लगता है। भोजपुरी कभी बोली रही होगी, आज बीस करोड़ से ज्यादा आबादी की वाणी के रूप में उसकी वैश्विक पहचान हो चुकी है। वह पूरी तरह भाषा कहे और माने जाने की हकदार है।

मीडिया के माध्यम से इधर भोजपुरी को आठवीं अनुसूची में शामिल करने की कोशिशें तेज हुई हैं। भोजपुरी फिल्मों में भी एक नया उभार देखने को मिला है। इस उभार ने भोजपुरी फिल्मों का नया उद्योग ही विकसित कर दिया। इस उद्योग में भोजपुरी भाषा में निहित आर्थिक संभावनाओं कों काफी हद तक प्रकाशित किया। यधपि फिल्मों के उभार को द्विअर्थी संवादों के माध्यम में लोक गीत और संगीत में आयी विकृति के रूप में देखा जा रहा है। इसकी आलोचना भी जारी है सबके बावजूद भोजपुरी फिल्म उद्योग आज एक सच्चाई है।

भोजपुरी भाषा की इस बहुविध सम्पन्नता को देखकर बिहार और उत्तर प्रदेश के अनेक विश्वविद्यालयों में भोजपुरी का पठन–पाठन हो

रहा है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने बाकायदा भोजपुरी अध्ययन केन्द्र स्थापित किया है। भोजपुरी बोली होने की सीमा से निकल कर भाषा का रूप ले चुकी है। इसीलिए अनेक राज्य सरकारों ने भोजपुरी अकादमियाँ स्थापित की है। इसमें सबसे पहले बिहार सरकार ने भोजपुरी अकादमी की स्थापना अपने संकल्प संख्या 520 दिनाँक–20 मार्च, 1977 द्वारा की थी (अकादमी का मेमोरेण्डम आफ एसोसिएशन) जो तब से निरन्तर कार्य कर रही है। श्री देवन्द्र प्रसाद सिंह (पूर्व कुलपति,) इसके पहले अध्यक्ष थे। हिन्दी के सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक देवेन्द्र नाथ शर्मा (पूर्व कुलपति) तथा रामेश्वर सिंह कश्यप भी इसके अध्यक्ष रह चुके हैं। 2008 से दिल्ली सरकार के अन्तर्गत भोजपुरी अकादमी बनी। मध्य प्रदेश सरकार के संस्कृति विभाग ने वर्ष सन् 2013 ई0 में भोजपुरी अकादेमी की स्थापना कर दी है । यह दोनों अकादमियाँ भी काम कर रही हैं।

मारीशस सरकार ने भोजपुरी को सरकारी भाषा का दरजा दिया और Bhojpuri Speaking Union Act 140/2011 के द्वारा भोजपुरी स्पीकिंग यूनियन की स्थापना कर दी है। वहाँ स्कूली स्तर पर भोजपुरी की पढ़ाई हो रही है। भोजपुरी की थाती को सहेजने ,सवारने और प्रकाशित करने के लिए प्रभावी संस्थाएँ गठित करनी होंगी। भोजपुरी का अभी तक कोई मानक प्रकाशन संस्थान नहीं है। भोजपुरी के लेखक अपने उद्यम से रचनाएँ छपवा तो लेते हैं पर उनके वितरण का उचित मंच नहीं है। इसके लिए सरकारी और गैर सरकारी स्तर पर प्रयास होने चाहिए। ऐसे प्रयास हो भी रहे हैं। अभी कुछ दिन पहले मॉरीशस सरकार ने भोजपुरी को सरकारी भाषा का दरजा दे दिया है। वहाँ भोजपुरी स्पीकिंग यूनियन बन गयी है। स्कूली स्तर से लेकर विश्वविद्यालय तक भोजपुरी के पठन–पाठन की कोशिशें हो रही हैं। भोजपुरी भाषा और साहित्य में आये इस अभूतपूर्व जागरण को लक्षित करके काशी हिन्दू विश्वविधालय एवं डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ (12नवम्बर सन् 2016 ई0) ने भी भोजपुरी अध्ययन केन्द्र की स्थापना की है। बिहार के कुछ विश्वविद्यालयों में भोजपुरी का पठन पाठन हो रहा है। वहाँ पहले से ही भोजपुरी अकादमी काम कर रही है। दिल्ली में भी भोजपुरी अकादमी की स्थापना हो चुकी है। इसी क्रम में मध्य प्रदेश सरकार ने भी सितम्बर सन् २०१३ ई0 में भोजपुरी अकादेमी की स्थापना कर दी है। इस मामले में उत्तर प्रदेश भले ही पीछे है। पर यहाँ इसके विकास के लिए प्रयास जारी हैं। ५ जनवरी २०१४ ई0 को भोजपुरी के साहित्यकारों ,विचारकों ,बुद्धिजीवियों ने काशी में जन भोजपुरी मंच का गठन किया गया है। यह भोजपुरी भाषा और समाज के समग्र विकास के लिए सोचने–विचारने और उद्दयम करने वालों का खुला मंच है। भोजपुरी के विकास के लिए समर्पित है। उत्तर प्रदेश में भोजपुरी अकादेमी बने इसके लिए विद्वतजनों के द्वारा कोशिशें जारी हैं।

भोजपुरी भाषा का जो प्रारूप आपको बाजारों मे देखने को मिलता है वह ऐसे लोगों की देन है जो भाषा को मनोरंजन के साधन के नजरिये से देखते है। वही आप भी देख रहे हैं। महुआ, बिग गंगा व अन्य भोजपुरी चौनलों पर केवल डी टाईप की फिल्में ही नहीं आतीं। तमाम धार्मिक, सांस्कृतिक व शिक्षाप्रद फिल्में व धारावाहिक अधिकांश समय में आती रहती हैं, आप इनको देखने का जज्बा तो दिखाईये। तमाम बहुराष्ट्रीय कम्पनियो के विज्ञापन इन चौनलों पर भोजपुरी में आते हैं जिनको आप हिन्दी चैनलों पर देखते हैं, यह भोजपुरी की ताकत ही है। अश्लील तथा बी व डी ग्रेड की फिल्में तो सभी भाषाओं में आती हैं। आधुनिक संचार माध्यमों द्वारा चोरी–चोरी और धड़ल्ले से प्रसारित भी होती हैं। इस बात को भी आप लोगों को उठाना चाहिये, केवल भोजपुरी के लिये यह मानक क्यों तय करते हैं। भिखारी ठाकुर, शारदा सिन्हा व लोहा सिंह जैसे भोजपुरी रत्नों को राजभाषा हिन्द ने भी अपने मुकुट में स्थान दिया है। वह भी उनके

भाषा को बिना तरासे। मातृभाषा से प्रेम करने वाले सभी भोजपुरी रत्न एंटीक ही हैं। स्वार्थवश लोग अपने नजरिये व जरूरत के हिसाब से उनको देख रहे हैं। भोजपुरी के भौड़े चमक–दमक को आप देखना चाहते हैं या चाह रहे हैं तभी आपको ऐसा दिखता है। भोजपुरी में कितनी किताबें हैं और विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में उसका क्या पाठ्यक्रम है, यह जानकारी हेतु आपको उन शैक्षणिक संस्थानों का भ्रमण करना चाहिये जहाँ भोजपुरी की पढ़ाई हो रही है। इस क्रम मे भोजपुरी अध्ययन केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में आपका स्वागत है। आप मैथिली व संथाली की बात कर रहे है तो आपको बताना चाहता हूँ कि कई विश्वविद्यालय मे भोजपुरी मे शोध हो रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय–वर्धा मे भोजपुरी शब्दकोश तैयार हो रहा है, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान– वाराणसी में भोजपुरी–हिन्दी व भोजपुरी–अंग्रेजी के अनुवाद का साप्टवेयर तैयार किया जा रहा है। अब बहुत सी पत्र–पत्रिकाएँ, समाचार पत्र व पुस्तकें भोजपुरी में आ रही हैं। विकीपिडिया भी भोजपुरी को भाषा मान अपने पटल पर स्थान दे चुका है। भोजपुरी ने तो अपनी पहचान बना ली है। अब अपने पद पर प्रतिष्ठित होने के लिये संघर्षशील है। भोजपुरी क्षेत्र से होने वाले प्रवासन के नाते भोजपुरी की उपस्थिति अखिल भारतीय ही नहीं वैश्विक भी है। अठारहवीं शताब्दी में प्लांटेशन एकोनामी के तहत हुए प्रवासन के कारण फीजी, सूरीनाम, मारीशस से होते हुए हालैण्ड और दक्षिण अफ्रीका तक भोजपुरी का विस्तार है। इस प्रकार दुनिया भर में भोजपुरी बोलने वालों की आबादी बीस करोड़ से अधिक है। जिसमें आठ से दस करोड़ की आबादी उत्तर प्रदेश में रहती है।

भोजपुरी का अपना स्वतंत्र व्याकरण है। जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन, उदय नारायण तिवारी, रास बिहारी राय शर्मा से लेकर डा0 सरिता बुधू (अध्यक्ष– भोजपुरी स्पीकिंग यूनियन मारीशस) ने भोजपुरी व्याकरण पर किताबें लिखी हैं। भाषा प्रौद्योगिकी के अनेक संस्थान कम्प्यूटर पर भोजपुरी के उपयोग पर कार्य कर रहे हैं। इसमें आई. आई. टी. बी. एच. यू. अग्रणी है।

भोजपुरी की विशाल शब्द सम्पदा का पता देने वाले अनेक शब्दकोश मौजूद हैं। गणेश चौबे के प्रसिद्ध भोजपुरी हिन्दी कोश के बाद हाल ही में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा से प्रकाशित भोजपुरी हिन्दी शब्दकोश है। भोजुपरी में सैकड़ों पत्र–पत्रिकाएँ निकल रही हैं। रेडियो और दूरदर्शन केन्द्रो से भोजपुरी में प्रसारण हो रहे हैं। भोजपुरी फिल्मों की एक नयी दुनिया हमारे देखते–देखते खड़ी हो गयी है। भोजपुरी फिल्मों का स्वतंत्र उद्योग एक सचाई है।

भोजपुरी माध्यम से आरंभिक शिक्षा के लिए मॉडल तैयार करना और प्रयोग करना होगा। भोजपुरी के शब्दकोश साहित्य कोश सन्दर्भ कोश तैयार करने होंगे। भोजपुरी में अनुवाद और भोजपुरी से अनुवाद की प्रक्रिया को तेज करना होगा। भोजपुरी फिल्म, साहित्य, पत्रकारिता के दोनों रूपों प्रिण्ट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया को विकसित करने की जरूरत है। भोजपुरी सिनेमा और संगीत का विकास तो खूब हुआ है ,पर इस पर विचार करना चाहिए कि उससे भोजपुरी की गरिमा कितनी बढ़ी है ,यदि नहीं तो क्यों ?

यदि उत्तर प्रदेश सरकार भोजपुरी अकादेमी की स्थापना करती है तो वह इस ऐतिहासिक प्रक्रिया को गति और दिशा देने के पुण्य में भागीदार होगी। उत्तर प्रदेश सरकार के इस कदम से भोजपुरी को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने के लिए हो रहे प्रयत्नों को भी बल मिलेगा। जाहिर है देश और विदेश की भोजपुरी भाषी जनता इस पहल के लिए आभारी होगी।

भोजपुरी भाषा के विकास में मीडिया ने समाज को सही दिशा और गति प्रदान की है और वर्तमान में भी कर रहा है। परन्तु भविष्य में इसमें

कुछ सुधार की अपेक्षा है क्योंकि मीडिया का कार्य सिर्फ भाषा के विकास, सूचना एवं मनोरंजन का ही नहीं बल्कि लोगों को हर क्षेत्र में जागरूक करते हुए स्वच्छ और नैतिक जनमत तैयार करना भी है। लोग क्या चाहते हैं, यह जरूरी तो है ही परंतु उसका समाज पर इसका क्या असर पड़ेगा यह देखना उससे भी ज्यादा जरूरी है। वर्तमान में मीडिया को इसी खोए हुए लक्ष्य को प्राप्त करने की महती आवश्यकता है। वर्तमान समय सूचना–सम्प्रेषण का युग है। सूचना ही शक्ति है एवं ज्ञान मानव जीवन का प्राण–वायु है। इसलिए मीडिया को बौद्धिक गुलामी का साधन न बनाकर अपितु उसे जनोन्मुखी, परिणामोन्मुखी, संवेदनशील एवं बहुजन हित पोषण का साधन बनाना होगा, तभी मीडिया की उपादेयता, प्रासंगिकता एवं प्रभावकारिता उचित सिद्ध होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- सरिता बुद्धु, मारीशस की भोजपुरी परंपराएँ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2003
- जॉर्ज ए0 ग्रियर्सन, लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया, भाग 2, 1903
- डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय,भोजपुरी लोकगीत भाग1,हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, द्वितीय संस्करण, सं0 2011
- डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय, भोजपुरी लोकगीत भाग1, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, द्वितीय संस्करण, सं0 2011
- कृष्णदेव उपाध्याय,भोजपुरी लोक साहित्य,विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक,वाराणसी,संस्करण–2008
- सम्मेलन पत्रिका (श्री रामनाथ सुमन का लेख–लोक संस्कृति विशेषांक)
- डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय, भोजपुरी लोकसाहित्य का अध्ययन (अप्रकाशित) तथा डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय, भोजपुरी लोकगीत भाग1, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, द्वितीय संस्करण, सं0 2011
- डॉ0 श्रीधर मिश्र,भोजपुरी लोकसाहित्य:सांस्कृतिक अध्ययन,हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद,प्रथम संस्करण,1971 भूमिका
- सत्यव्रत सिन्हा, भोजपुरी लोकगाथा, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1957
- दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह, भोजपुरी लोकगीत में करुण रस, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, द्वितीय संस्करण, 1965
- डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव–लोक संस्कृति के आइने में भोजपुरी भाषा (चिन्तन के विविध आयाम)–ओमेगा पब्लिकेशन्स,4378/4 B,G-4 जे0 एम0 डी0 हाउस गली मुरारी लाल अंसारी रोड,दरियागंज, नई दिल्ली–110002,संस्करण–2010
- https://www.facebook.com/permalink.php?id
- http://www.patnanow.com/bhojpuri-aandolan/
- https://hi.wikipedia.org/wiki
- http://www.liveaaryaavart.com/2016/11/talk-on-bhojpuri.html
- फीचर्स स्पीकिंग आउट से प्रेस यूनियन आफ लाइबेरिया 8। 10। 2012
- नया ज्ञानोदय, अक्टूबर 2011

Copyright © 2017, Dr. Jyoti Sinha. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.